International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 30-05-2022, Accepted: 17-06-2022, Published: 02-07-2022
Volume 8, Issue 4, 2022, Page No. 4-6

डॉ अंबेडकर एवं महात्मा गांधी की हरिजन चेतना

इंदु
शोधार्थी, इतिहास विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश
बच्चों के मन–मस्तिष्क के विकास में तत्कालीन परिस्थितियां प्रमुख रूप से उत्तरदाई होती है। उनका घर, परिवार व समाज उनके व्यक्तित्व निर्माण में अपनी महती भूमिका निभाता है। इसी व्यक्तित्व–निर्माण से उनकी अपनी पहचान बनती है व वैश्विक परिदृश्य में एक पहचान भी बनी। महात्मा गांधी व डॉ. भीमराव अंबेडकर भी ऐसे ही दो महान विभूतियां हैं जिनके मन–मस्तिष्क पर उनके घर, परिवार व समाज के वातावरण का गहरा प्रभाव पड़ा और आगे चलकर ये दो महान विभूतियां अपने विचारों वा कार्यों, चाहे वो सामाजिक हो, राजनीतिक हो या धार्मिक हो द्वारा विश्व क्षितिज पर उन्होंने अपनी चमक बिखेरी स जहां गांधी जी ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व प्रदान कर देश आजादी में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया और राष्ट्रपिता के रूप में ख्यातिलब्ध हुए। वहीं डॉ अंबेडकर ने भारत की संविधान निर्मात्री सभा को नायकत्व प्रदान करते हुए विश्व का सबसे विशाल लिखित संविधान देश को समर्पित कर अपने अदम्यकौशल का परिचय दिया।
महात्मा गांधी व डॉ भीमराव आंबेडकर दोनो ही हमारे देश की महान विभूतियां हैं यह हमेशा अपने आदर्शों, विचारों, कार्यों के रूप में अपनी प्रासंगिकता एवं महत्ता बनाए रखे हुए हैं।

मूल शब्दः हरिजन चेतना, मन–मस्तिष्क के विकास, वैश्विक परिदृश्य

प्रस्तावना
सब जानते हैं कि व्यक्तित्व निर्माण में परिवार के साथ साथ समाज का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है।घरेलू वातावरण के साथ साथ सामाजिक वातावरण भी बच्चे के मस्तिष्क विकास को प्रभावित करता है। बच्चे के मस्तिष्क विकास ने कई घटको वा कारकों का प्रभाव होता है फिर चाहे वह जैविक करके हो, पारिवारिक ही, सामाजिक या प्राकृतिक कारक हो सब मिल कर मस्तिष्क को विकसित करने के साथ साथ व्यक्तित्व निर्माण में भी सहायक होते हैं और इन सब का असर स्वभाव निर्माण पर भी होता है वा जीवन की दशा दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जिसकी परिणित हमे भारत की महान विभूति भारत रत्न भीम राव अंबेडकर के जीवन में देखने को मिलती है क्योंकि बाल्यकाल से ही अंबेडकर का जिस उपेक्षा, अनादर, तिरस्कार से साक्षत्कार हुआ उसका दंश जीवन पर्यन्त उनके साथ रहा वे ताउम्र इस विभीषिका से जूझते रहे वा अपने समाजोत्थान में कार्यरत रहे। दूसरी तरफ महान आदर्श वा महानायक महत्मा गांधी जी थे जिनके व्यक्तित्व निर्माण में उनकी मां पुतलीबाई वा उनके समाज ये वातावरण की छाप देखने को मिलती है। बापू जी का सनातन धर्म की ओर झुकाव उनकी मां की वजह से ही था क्योंकि बचपन से ही उनके आस पास वा घर का माहौल आध्यात्मिकता से लबरेज था जिसका असर उनके व्यक्तित्व पर भी पड़ा। गांधी जी एक गुजराती वैश्य परिवार में जन्मे थे जिसकी समाज में अच्छी स्थिति थी जिस कारण गांधी जी को समाजिक असमानता का सामना या ये कहें सामाजिक ऊंच नीच के पद क्रम का स्व अनुभव अपने देश में रहते हुए नहीं हुआ बल्कि जब वह दक्षिण अफ्रिका में डरबन से प्रिटोरिया की यात्रा पर थे तब ट्रांसवाल की राजधानी मेर्तिसबर्ग में उनको 23–24 वर्ष की आयु में इसका कटु अनुभव हुआ और वह यह था कि उनके पास पहले दर्जे का टिकट होने के बावजूद अंग्रेजो द्वारा गाड़ी से उन्हें उतार देना क्योंकि वह काले थे यानी अंग्रेज नहीं। यह भेदभाव का पहला अनुभव उन्हें प्रप्त हुआ। "मेरित्सबर्ग में कड़ाके की सर्दी थी उस रात में गांधी जी के हृदय में सामाजिक प्रतिरोध का अकुर पैदा हुआ। "(पेज़ न, 22, गांधी की कहानी, लेखक लुई फिशर)
वहीं डॉक्टर अंबेडकर का जन्म आती उपेक्षित महार जाती में होने के कारण अपने ही देश में अंबेडकर का सामाजिक भेदभाव से सामना बचपन से होता रहा। योग्य होते हुए भीवह समाज के ऊंच नीच परम्परा के शिकार हमेशा होते रहे। बाल्यकाल से ही उनका इस पदानुक्रम जिसको समाज ने बनाया था के कटू अनुभव से साक्षात्कार होता रहा जिसका असर उनके व्यक्तित्व पर पड़ा । वह इस सामाजिक दंश को झेलते हुए अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर रहे। अंबेडकर इस सामाजिक भेदभाव की जड़ हिन्दू धर्म की वर्ण व्यवस्था को मानते थे उनका कहना था कि वर्ण व्यवस्था श्रम विभाजन पर नहीं श्रमिक विभाजन पर आधारित हैं थी से ये कलुषित पर क्रम की शुरुआत होती जिसे बिना तर्क केहिंदू धर्म ग्रंथो द्वारा प्रमाणित किया जाता रहा है क्योंकि इन ग्रन्थों में लिखे वचन भगवान के मुख से निकले हुए हैं ब्रह्म वाक्य की तरह है तो गलत हो ही नहीं सकते, इनमे प्रश्न नहीं किया जा सकता ।क्या ईश्वर के यहां भी ऊंच नीच हो सकता है? अगर ऐसा है तो ऐसे धर्म को अंबेडकर जी धर्म ही नहीं मानते थे। जहां ईश्वर प्राप्ति का अधिकार कुछ लोगो (उच्च जाति) को ही मिला हुआ हो। डॉक्टर अंबेडकर का कथन था कि"हिन्दू कहलाने के साथ ही मुझे स्वीकार करना पड़ता है कि जन्म से मैं एक नीच जाति का हूं। इसलिए मेरे ख्याल से मुझे हिन्दुओं से कह देना चाहिए की आप मुझे ऐसा धर्म सिद्धांत बताइए जिसमे ऐसा निचपन का भाव न आए। यदि ऐसा न हो तो मुझे हिन्दू धर्म को तिलांजलि दे देनी चाहिए।"(पेज़ न 24,गांधी और दलित भारत जागरण, लेखक श्री भगवान सिंह)

वहीं दूसरी तरफ गांधी जी वर्णाश्रम व्यवस्था में कोई दोष नहीं देखते थे क्योंकि गांधी जी खुद कर्म योगी थे वे कर्म को प्रधानता देते थे उनका मानना था कि हिन्दू धर्म बहुत व्यापक धरीता वाला है लेकिन एक लंबे वक्त से इसकी पुनर्व्याख्या न होनेके कारण इसमें संकीर्णता वा जटिलता आ गई है बस जिसे दूर करने की जरूरत है, जैसे किसी उपजाऊ खेत को यूहीं खाली छोड़ दिया जाए,समय समय उसकी जुताई वगैरह न की जाय तो बहुत सारा खरपतवार उग आता है ऐसी अवस्था में उस खरपतवार को साफ करने की आवश्कता होती हैं न कि खेत छोड़ देना समस्या का उपाय। गांधी जी कहते हैं कि," वर्ण वयवस्था पर टिके हिन्दू धर्म का परित्याग करने के बजाय उसमे अस्पृश्यता के रूप में उग आए अनावश्यक कटिले झाड़ झकाड को उखाड़ फेकना आवश्यक समझता हूं। "(पेज़ न 33, गांधी और दलित भारत जागरण,लेखक श्री भगवान सिंह)

हिन्दू धर्म की व्याख्या करने वाले धार्मिक ग्रन्थों को लेकर भी गांधी व अंबेडकर के विचारो में मतेक्य देखने को मिलता है चाहे वह गीता हो,मनु स्मृति, पुराण या वेद हो। जहां गांधी जी के जीवन में भगवद गीता का पूरा प्रभाव देखने को मिलता है तो वहीं दूसरी तरफ अंबेडकर इसे सिरे से नकार देते हैं।गीता अंबेडकर के विचारो को प्रभावित न के सकी। क्योंकि उनका मानना था कि ये जाति पद क्रम ऊंच नीच, छुआ छूत की मूल जड़ वर्ण व्यवस्था है और गीता इसको सही ठहराती है।एक तरफ गांधी का पूरा आध्यात्मिक जीवन ही गीता पर टिका हुआ है।वह कहते हैं कि गीता उनकी आध्यात्मिक शब्दकोष हैं।उन्हें गीता से बहुत आत्मबल मिलता है।वह गीता को एक ऐसेमहा ग्रन्थ के रूप में देखते हैं जिसमें समस्त मानव जग जीवन समाहित हैं उस अथाह समुद्र की तरह जो अपने अंदर आसख्य रत्न वनस्पतियां और पता नहीं क्या क्या सामाए हुए हैं।आप अपनी अवशक्तानुसार उससे प्राप्त करते रहते है बशर्ते आप को जानकारी हो।उसी तरह गीता को भी गांधी जी मानव जीवन की समस्त समस्याओं के समाधान के रूप में देखते हैं।उनका मानना है कि जीवन की विसंगतियों से जुड़ी हुई सभी प्रश्नों के जवाब इसमें समाहित हैं।गांधी जी कहते है कि,"जब शंकाए मुझे घेर लेती हैं जब निराशाएं मेरे सामने आकर खड़ी हो जाती हैं और मुझे आशा की एक भी किरण नहीं दिखाई देती,तब मै भगवद गीता का आश्रय लेता हूं और चित्त को शांति देने वाला श्लोक पा जाता हूं।" (यंग इंडिया, 6 अगस्त 1925 का अंक, लेखक महत्मा गांधी)

वहीं अंबेडकर गीता के कई अंशो पर घोर आपत्ति व्यक्त करते हैं उनका मानना है कि यह पुस्तक पूरी तरह से तर्क की कसौटी में सही नहीं ठहरती है।उनका मानना था कि मैने गीता को कई बार पढा है लेकिन इसके कुछ अंश हमेशा मुझे व्यथित ही करते हैं सी। इन धार्मिक ग्रंथों में प्रश्न करने का अधिकार ही नहीं है जो सर्वथा गलत है जब तक आत्म संतुष्टि न मिल जाए तब तक तर्क के जरिए सत्य की खोज करनी चाहिए,"नीच कुल में पले कर्ण की मृत्यु को लेकर वह खास तौर पर व्यथित थे"। (पेज़ न93, एक था डॉक्टर एक था संत लेखक अरुधंति रॉय अनुवादक अनिल यादव) उनका विचार था कि गीता में,"हत्या के पक्ष का ऐसाबचाव किया गया है जो कभी देखा न सुना"। (पेज़ न 59, एक था डॉक्टर एक था संत लेखक, अरुंधति रॉय, अनुवादक अनिल यादव, रतनलाल) उन्होंने गीता का 15 वर्षों तक अध्ययन किया जिसके आधार पर तीन बातो का वर्णन किया है

- मरना, मारना और हिंसा करना पाप कर्म है या नही
- वर्णाश्रम धर्म पर आचरण करने कामहत्व
- भक्ति से मोक्ष प्रप्ति होती है कि नहीं।

गीता के कारण ही आज तक चातुर्य वर्ण जीवित है" (गीता 4:13), (अंबेडकर जी के द्वारा दिया भाषण 14 सितम्बर 1944, प्रभात सिनेमा मद्रास)

वह कृष्ण के चरित्र को लेकर हमेशा सशंकित रहे उन्हें वह चरित्र हमेशा विरोधाभासी लगा कि एक ही बात को वह कभी जायज़ ठहराते हैं तो वहीं बात दूसरी जगह नजायज कैसे? वे कहते हैं भी है कि,"कृष्ण छल करते हैं उनका जीवन छल ही छल था"। (पेज़ न. 93, एक था डॉक्टर एक था संत,अरुधंति रॉय अनुवादक अनिल यादव)

अंबेडकर का कृष्ण को लेकर विचार था कि गीता में कृष्ण स्वयं विराट रूप परमेश्वर के रूप में सामने आते हैं और उनके वचन क्योंकि ईश्वर के मुख से निकले वचन है इसलिए उसमे कोई त्रुटि हो ही नहीं सकती यह बिना तर्क मान लेना अंध भक्ति होगी जो सर्वथा गलत है।

अंबेडकर धर्म विरोधी नहीं थे वह जीवन के लिए धर्म को अपरिहार्य मानते थे उनका मानना था कि सामाजिक जीवन के लिए धर्म मार्ग दर्शक के रूप में होता है उनका कहना था कि धर्म सदाबहार होना चाहिए, धर्म की आलोचना की जा सके तर्क द्वारा उसकी पुष्टि की जा सके व धर्म सर्व न्याय पूर्ण हो व सभी के साथ समानता का व्यवहार प्रदर्शित करे इन्हीं सब कारणों से वह हिन्दू धर्म व वर्ण व्यवस्था के विरोध में होते चले गए क्योंकि वह जिस गति से व मुखर रूप से बदलाव चाहते थे वह उन्हें दूर दूर तक नजर नहीं आ रहा था जिस कारण 1936 में ही उन्होंने धर्म परिवर्तन की बात कह दी थी व अंतः 14 अक्टूबर 1956 को उन्होंने धर्म परिवर्तन कर लिया क्योंकि उनका मानना था कि निम्न कुल में जन्म लेना उनके अधिकार में नहीं था पर उसी दशा में मरना गलत होगा उस दशा में सुधार का आत्मबल व अधिकार दोनों मेरे पास है।

वहीं गांधी धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे और अपने समाज के सचेत नागरिक भी ।उनका चिंतन बहुत गम्भीर और मौलिक था। वर्ण व्यवस्था पर सहमति जताते हुए उसमें मौजूद विसंगतियों पर भी बात करते हैं उनके अनुसार इन विसंगतियों को दूर करने के लिए व्यक्तिगत नैतिक आस्था पर बल देना जरूरी है उनका मानना था कि जब समाज नैतिक बोध से अनु प्रेणित होगा तो सत्ता के शीर्ष में बैठे और समग्र अधिकारों का सवहन करने वाले जिम्मेदार लोगो का स्वतह हृदय परिवर्तन होगा और वह सभी (शूद्र) जन को समान अधिकार उपलब्ध करवाएं गे,जिनसे वो लोग अभी तक वंचित है,जो कि व्यवहारिक रूप से न कभी देखने को मिला न ही यह सम्भव प्रतीत होता है।इतिहास गवाह हैं कि जब जब वंचितों ने अपने हक और हुकूक की बात की है तो उनका सत्ता से संघर्ष हुआ है जो अधिकांशतरू खूनी संघर्ष में तब्दील हो गया।इतिहास का एक उद्देश्य यह भी है कि वह मानव चेतना विस्तार में सहायक होता है,अतरूइतिहास से सीख लेते हुए गांधी अपने विचारधारा के साथ अपने कर्तव्य मार्ग पर आगे बढ़ते रहे और अंबेडकर अपनी विचारधारा के साथ.....

संदर्भ सूची

1. पेज नंबर, 22, गांधी की कहानी, लुई फिशर।
2. पेज नंबर 24, गांधी और दलित भारत जागरण, लेखक श्री भगवान सिंह।
3. पेज नंबर 33, (वही)
4. यंग इंडिया 6 अगस्त 1925 का अंक,लेखक महात्मा गांधी।
5. पेज नंबर 93, एक था डॉक्टरएक था संत, लेखक अरुंधति राय अनुवादक अनिल यादव रतनलाल।
6. गीता गीत 4/13, अंबेडकर जी का भाषण 14 सितंबर 1944 प्रभात सिनेमा मद्रास।
7. पेज नंबर 93 एक था डॉक्टर एक था संत, लेखक अरुधंति राय, अनुवादक अनिल यादव रतनलाल।
8. श्री भगवान सिंह भारतीय,गांधी और दलित भारत जागरण,ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली
9. लुई फिशर गांधी की कहानी सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन नई दिल्ली।
10. अरुंधती राय, अनुवादक अनिल यादव रतनलाल एक डॉक्टर एक था संत राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली
11. कन्हैयालाल चंचल एक और चंद्र आधुनिक भारत का दलित आंदोलन वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
12. डॉ रामायण राम डॉक्टर अंबेडकर चिंतन के बुनियादी सरोकार नवारून प्रकाशन गाजियाबाद
13. डॉ रामायण राम भारत में जाति प्रथा डॉक्टर भीमराव अंबेडकर नव अरुण प्रकाशन गाजियाबाद।
14. ओमप्रकाश वाल्मीकि,
15. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली
16. भगवत गीता, गीता प्रेस गोरखपुर
17. बजरंग बिहारी तिवारी, दलित साहित्य एक अंतर यात्रा,नव अरुण प्रकाशन गाजियाबाद।
18. डछ श्री निवास आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।